आध्यात्मिक प्रश्नोत्तरी

(गुरु पूर्णिमा - ई २०१२)

प्रश्न-१ - 'गुरु' का अवस्थान कहाँ होता हैं?

उत्तर – हृदयाकाश के मध्य अवस्थित शुद्ध स्फटिक सदृश धवल अंगुष्ठमात्र चिन्मय पुरुष अर्थात् हमलोगों के देहाभ्यान्तरस्थ आत्मा ही हुआ 'गुरु' पदवाच्य। हृदयाकाश प्रायः अंगुष्ठमात्र परिमित होने के फलस्वरूप 'गुरु' रूपी पुरुष ब्रह्म को हृदय के मध्य ही योगीजन ध्यान करते हैं।

प्रश्न-२ – 'सद्गुरु' का अवस्थान कहाँ होता हैं?

उत्तर – 'सद्गुरु' का अवस्थान ब्रह्माण्ड के बाहर और असीम के मध्य होता है। सगुण रूप में 'सद्गुरु' हुए प्रणवरूपी हिरण्मय पुरुष; ये पिण्ड और ब्रह्माण्ड के बाहर अवस्थान करते हैं।

प्रश्न-३ – स्वयंसृष्टि तत्त्व और गुरुतत्त्व में पिण्ड क्या हैं? 'पद' किसे बोला जाता हैं? रूप और रूपातीत का तात्पर्य क्या हैं?

उत्तर – कुण्डलिनी शक्ति को 'पिण्ड' कहा जाता है, 'हंस' को 'पद' कहकर जाना जाता है; चित्शक्तियुक्त आत्मारूपी आत्मबिन्दु ही रूप और रूपातीत हुए, वे ही निरंजन अर्थात् परमब्रह्म हैं।

प्रश्न-४ – 'हंस' पद क्या हैं?

उत्तर – 'हंस' पद 'सः अहम्' इसी महावाक्य द्वारा सिद्ध है। 'हंस' – सोहम्, यह विलोम और अनुलोम क्रिया, प्रलय और सृष्टि, प्रश्वास और निःश्वास बोधक है। 'हंस' पद हुआ जीवात्मा के क्षेत्र में और शिवात्मा के क्षेत्र में हुआ 'सोहम्'। 'हंस' – अहम्, मैं जीवात्मा, 'सः'- वह परमात्मा। फिर 'सः' वह परमात्मा सर्वस्वरूपी अव्यय आत्मा, वही तत्त्व ही 'अहम्' जीवरूप से कल्पित देहोपाधिक आत्मा अथवा जीवात्मा - यही सृष्टि है।

प्रश्न-५ – आगम और निगम शास्त्र किसे कहा जाता है? 'गुरुतत्त्व और गुरुगीता' के वक्ता और श्रोता कौन हैं?

उत्तर - आगम – वक्ता शिव, श्रोता पार्वती।
निगम – वक्ता पार्वती और श्रोता शिव।

गुरुतत्त्व और गुरुगीता के वक्ता श्रीमहादेव कैलाशपति देवादिदेव एवं श्रोता हुई उनकी पत्नी पार्वती देवी। अतएव गुरुगीता 'आगम' शास्त्र कहकर परिगणित है।

प्रश्न-६ – किस प्रकार पार्वतीदेवी ने महादेव से गुरुगीता का आदेश प्राप्त किया?

उत्तर – एकबार मनोरम कैलाश पर्वत के शिखर पर महादेव सह उपविष्ट भक्तिसाधन में तत्पर देवी पार्वती अपनी सन्तानों के कल्याणार्थ भक्तिसाधन के विषय पर विशेषभाव से जानने को इच्छुक हुई तब देवादिदेव को प्रणाम निवेदन कर जिज्ञासा किया – ''हे जगत्गुरु सदाशिव, सदा मंगलकारी, मेरे शिष्यों के कल्याणार्थ मुझे 'गुरुगीता' प्रदान कीजिए। किस साधनमार्ग का अवलम्बन करने से देही जीव जो अपने को देह कहकर जानता है वह ब्रह्ममय अथवा ब्रह्मस्वरूप हो सकेगा? मुझे वही मार्ग निदेर्शित कीजिए। तब पार्वतीदेवी के अनुरोध पर श्रीमहादेव ने उनकी प्रीति के लिए परम कल्याणकारी 'गुरुतत्त्व और गुरुगीता' का उपदेश दिया।

प्रश्न-७ – 'गुरु' शब्द का प्रकृत अर्थ क्या हैं?

उत्तर – 'गु' शब्द का अभिप्राय अंधकार से है एवं 'रु' शब्द आलोक की ओर इंगित करता है। जो हमें अंधकार से आलोक की ओर ले जाते हैं, उन्हें ही गुरु बोला जाता है।

प्रश्न-८ – 'बिन्दु-नाद-कलातीतं; तस्मै श्री गुरवे नमः' – यह बिन्दु, नाद और कला क्या है एवं किसे बोला जाता है?

उत्तर – 'बिन्दु' अर्थात् कुण्डलिनी, सृष्टि उन्मुख कारणावस्था की पराशक्ति। 'नाद' का तात्पर्य है आदि शब्दब्रह्म प्रणव, परावाक् एवं 'कला' हुई शक्ति एवं शिव के तत्त्व के अधिष्ठानभूत सृष्टितत्त्व के अंश विशेष। जिस प्रकार पराशक्ति या बिन्दु को एवं पराशक्तियुक्त परमेश्वर अथवा शिव से उद्भूत समस्त पदार्थों को 'तत्त्व' कहा जाता है और कला में प्रकृति और पुरुष के तत्त्वादि का स्फुरण होता है। जिस प्रकार, विद्या-अविद्या, काल-कला, मन-बुद्धि-

अहंकार; इत्यादि।

प्रश्न–९ – श्रीगुरु के श्रीचरणों का ध्यान कहाँ करना चाहिए?

उत्तर – मस्तकस्थ सहस्रारस्थित गुरुचक्र पर श्रीगुरु के चरणों का ध्यान करना चाहिए।

प्रश्न–१० – श्रीगुरु का ध्यान कहाँ करना चाहिए?

उत्तर – अष्टदलयुक्त हृदयपद्मकर्णिका के मध्य में विराजित सिंहासन अवस्थित जिनकी दिव्य मूर्ति चन्द्र की ज्योति द्वारा विभूषित है, जो सच्चिदानंद स्वरूप हैं, तथा वे समस्त प्रकार के वैराग्यादि, अभीष्ठ वर प्रदान करने वाले हो ऐसी गुरुमूर्ति को ध्यान करना चाहिए।

भगवान के नाम की ऐसी महिमा है कि कोई भी विपदा भक्त को स्पर्श नहीं कर पाती। परमपिता के प्रति अटल विश्वास के फलस्वरूप ही निर्विकार चित्त उनकी अपार महिमा की उपलब्धि कर पायेगा। एकमात्र प्रेम से ही भगवान वशीभूत होते हैं। महात्मा मीराबाई ने कहा है, 'बिना प्रेम से नाहि मिले नन्दलाला'।

–श्रीश्रीमाँ सर्वाणी